International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 37-38

डॉ0 कैलाश चन्द शर्मा 'शंकी' के उपन्यास 'बदनाम आरजू' में सामाजिक परिवेश

वनीता कुमारी

शोधकर्त्री, हिन्दी पीएच0डी0, सिंघानिया यूनिवर्सिटी, पचेरी बड़ी, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

गद्यबद्व कथानक के माध्यम द्वारा जीवन तथा समाज की व्याख्या का सर्वोत्तम साधन उपन्यास है। उपन्यास को आधुनिक युग की देन कहना अधिक समीचीन है। साहित्य में गद्य का प्रयोग जीवन के यथार्थ चित्रण का द्योतक है। साधारण बोलचाल की भाषा द्वारा लेखक के लिए अपने पात्रों, उनकी समस्याओं तथा उनके जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना आसान हो गया है। यथार्थ के प्रति आग्रह का एक अन्य परिणाम साहित्य के अपौरूषेय तथा अलौकिक तत्व, जो प्राचीन सीमाबद्व हो गई। एक ओर जहॉ विज्ञान ने व्यक्ति तथा समाज को सामान्य धरातल से देखने तथा चित्रित करने की प्रेरणा दी, वहीं दूसरी ओर उसके जीवन की समस्याओं के प्रति एक नए दृष्टिकोण का भी संकेत किया। यह दृष्टिकोण मुख्यतः बौद्विक था। उपन्यासकार के ऊपर कुछ नए उत्तरदायित्व आ गए थे। अब उसकी साधना कला की समस्याओं तक ही सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक जागरूकता की अपेक्षा रखती थी। वस्तुतः आधुनिक उपन्यास सामाजिक चेतना के क्रमिक विकास की कलात्मक अभिव्यक्ति है। जीवन का जितना व्यापक एवं सर्वांगीण चित्र उपन्यास में मिलता है उतना साहित्य के अन्य किसी भी रूप में उपलब्ध नहीं।

डॉ0 कैलाशचन्द शर्मा 'शंकी' सामाजिक जीवन की विशद् व्याख्या प्रस्तुत करने के साथ ही साथ आधुनिक उपन्यास वैयक्तिक चरित्र के सूक्ष्म अध्ययन की थी सुविधा प्रदान करता है। इनके उपन्यास में पहली बार मानव चरित्र के यथार्थ, विशद् एवं गहन अध्ययन की संभावना देखने को मिली। जहॉ इतिहास कुछ विशिष्ट व्यक्तियों एवं महत्वपूर्ण घटनाओं तक ही सीमित रहता है, उपन्यास प्रदर्शित जीवन के सत्य, शाश्वत और संवेदनशील महत्व रखते हैं। डॉ0 शंकी सच्चे अर्थ में अपने युग का इतिहासकार जीवन की झॉकर प्रस्तुत करता है। इनके अनुसार समाज की महत्वपूर्ण संस्था 'परिवार तथा समाज के महत्वपूर्ण अंग 'व्यक्ति' के इस बदलाव के दौर में परिस्थितियों का शिकार हो जाना स्वाभाविक है। 'राधे' नामक व्यक्तित्व जिसने अपने स्वार्थ, हवस एवं काम वासना पूर्ति की तृप्ति की तीव्र लालसा में पुरानी एवं नई पीढ़ी को गुमराह करने का घिनौना काम किया। 'बदनाम आरजू' समाज के बदलावों को उसने दोस्ती, रिश्ते, नाते, प्यार, विश्वास एवं भरोसे जैसे आस्थामयी संबंधों के प्रारूपों को बदलकर उसके मायनों को पूर्णतया विध्वंसक बनाकर अनैतिकता का जामा पहना दिया।

'बदनाम आरजू' डॉ0 शंकी द्वारा कृत एक सामाजिक परिवेश में बदलते संबंधो को आईना दिखाता है। आज हमारे समाज में व्यक्तियों की मानसिक सोच इतनी संकीर्ण हो चुकी है कि उसे एक कदम आगे का भी दिखाई नहीं देता। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को आघात पहुॅचाना, चाहे जनहानि ही क्यों ना हो। आज मनुष्य मूल्यहीन, अनैतिकता एवं मित्रता के प्रति विश्वासघात का बदनुमा दाग है। उसे केवल संबंधों को बिगाड़ना आता है संवारना नहीं। जिसके दुष्परिणाम सिवाय बर्बादी के कुछ नहीं।

राधे नाम हमेशा परमात्मा स्वरूप श्री कृष्ण के साथ जुड़कर पवित्रता की सार्थकता का प्रतीक होता है, लेकिन 'बदनाम आरजू' का राधे इसके विपरीत कपटी, स्वार्थी, मूल्यहीन, अनैतिक एवं मित्रता के नाम पर एक बदनुमा दाग है। वह अपने पैरों के बलबूते पर अपने दोस्त के प्यार को छिनने की कोशिश ही नहीं बल्कि बार–बार अपने सबसे प्रिय दोस्त राकेश के साथ विश्वासघात करता है। उसे बर्बाद व खत्म कर देना चाहता है। जिसके साथ–साथ उनके अन्य दोस्त चॉद, सूरज, ईश्वर आदि भी उसकी चाल के शिकार होते हैं। राधे का घनिष्ठ है राकेश। वे दोनों एक साथ पढ़ते हैं। दोनों में गहरी दोस्ती हो जाती है। राकेश शंका से प्यार करता है जो उनके मोहल्ले में रहती है। वह अपनी और शंका के बीच की सारी बातें राकेश को बता देता है। जिसका फायदा उठाकर राधे, राकेश और शंका के बीच शंका की दीवार खड़ी कर अपना प्यार जताना चाहता है। जिसके चलते वह कई बार रूपए देकर गुण्ड़ों से राकेश को पीटवाता भी है और शंका के सामने राकेश के शराबी होने का प्रमाण दिखाकर घृणा पैदा करना चाहता है। इन सब परिस्थितियों के चलते राकेश का दोस्ती पर से विश्वास उठ जाता है। उसे सन्देह होने लगता है कि शंका भी अब उससे प्यार नहीं करती वह भी राधे को चाहने लगी है। परिस्थितियॉ मनुष्य को विचलित कर देती, जिसका शिकारा राकेश हुआ था। जिसके चलते एक अच्छा खासा व्यक्तित्व का धनी राकेश शराब का सहारा लेना लगता है। पैग और शराब के पी चुकने के बाद वह स्वयं बुदबुदाता है– ''शराब मैं तुम्हें अब जीवन भर नहीं छोड़ सकता। तू मुझे सुख और आराम देती है। तेरे ये एहसान मैं जीवन भर नहीं भूल सकूॅगा। तू मुझे शबाब से भी अच्छी लगती है। तू तो मुझे धोखा नहीं देगी।''[1] इतना कहकर शराब का एक पैग और राकेश ने गले से उतारा। उसका सिर चकराने लगा और बेसुध होकर पलंग पर जा पड़ा। इतने में उसका दोस्त राधे कमरे में प्रवेश करता है। वह वहॉ का वातावरण देखकर मन ही मन खुश हुआ और कहा– ''भगवान अब तो शंका मेरे हाथ में जरूर आ जाएगी। क्या वह इस शराबी से अब भी मोहब्बत करेगी।''[2] शंका, जो राकेश से प्यार करती थी, राकेश के इस दोस्त की बातों के कारण कुछ बदल तो गई थी, मगर फिर भी राकेश के दिल में जगह जरूर थी।

'बदनाम आरजू' का राधे दोस्ती के नाम पर कलंक और फरेब है। आज कोई किसी का सच्चे मायने में दोस्त नहीं। सिर्फ दिखावा रह गया है। दोस्ती के नाम पर फरेब से भरे राकेश और राधे के बीच के संवाद–

> ''क्यों भोला बनने की क्या बात है राधे?''
> ''मेरा दिल खराब हो जाता है, राकेश! जब मैं अपने दोस्त की बरबादी देखता हूॅ।''
> ''आजकल तो दोस्ती के नाम पर कलंक और फरेब है राधे।'' राधे ने व्यंग्य कसा।

''क्या मतलब है तुम्हारा?'' राधे ने पूछा। मतलब साफ है, आज कोई किसी का सच्चे मायने में दोस्त नहीं। सिर्फ दिखावा है। वह भी अपना मतलब निकालने के लिए। यह राकेश का दूसरा व्यंग्य राधे पर था।

आज समाज के गिरते मूल्यों का डॉ0 शंकी ने बहुत ही सहज

संजोकर प्रस्तुत किया। हिन्दी उपन्यासों के क्षेत्रों में 'शंकी' के कृतित्व का अपना वैशिष्ट्य है। इस विद्या में सौन्दर्यीपजीवी एवं स्वच्छन्दतावादी लेखक था सामाजिक रूप प्रकट हुआ है। उनकी समस्त औपन्यासिक कृतियां, उनकी जीवनदृष्टि, उसकी लोक संग्रही वृति और उनकी युग–विश्लेषण शक्ति का परिचय देती है। इसमें वैयक्तिक जीवन के चित्रण की प्रमुखता है। अतः हम उन्हें व्यक्तिवादी उपन्यासधारा का कवि कह सकते हैं। वे किसी समुदाय विशेष के प्रतिनिध नहीं है। व्यक्तिवाद के साथ उनकी कृतियों में सामाजिक चेतना भी परिलक्षित हुई है। यहॉ वैयक्तिक जीवन का चित्रण भी मनोवैज्ञानिक आधार पर हुआ है। वैयक्तिक चेतना की यह अभिव्यक्ति अन्तर्मुखी एवं आत्मकेन्द्रित है, किंतु सामाजिक चेतना, मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना आर सर्वांगीण व्यक्ति के भाव दोनों यहॉ पूर्णतः मुखरित हैं।

डॉ0 शंकी ने बदलते समाज के स्वरूप को देखकर चिन्ता व्यक्ति करते हुए अपने आप को इस समाज में ही महसूस कर रहे हैं। आज पैसे वालों का कोई ईमान और धर्म नहीं। पैसे के बलबूते पर आज इन्सान, इन्सान को इन्सान नहीं समझता। सब कुछ तो कर सकता है। फिर राधे क्यों पीछे रहता उसे भी अपनी अमीरी पर घमण्ड है।''[4] अपने पैसों के घमण्ड़ में राधे, राकेश को पिटवाने की योजना को अमलीजामा पहनाते हुए अपने दोस्त तिवाड़ी से कहता है – ''और जब तक मेरे पास रूपए हैं, मैं किसी से नहीं डरता।''

आज समाज इतना दूषित हो चुका है न दोस्तों की दोस्ती रही न प्रेमिका का प्रेम सब एक छलावा मात्र है। 'बदनाम आरजू' की नारी पात्र या यूँ कहें नायिका शंका एक सुन्दर स्त्री है जिसके चाहने वाले अनेक हैं। या यूं कहें फूल एक, माली अनेक। सब सीनाजोरी है। राकेश अपने दोस्त शेख को अपने टूटे हुए दिल से इस दुनिया का आईना दिखाते हुए कहता है–

''पुष्प पर भरोसा किया वह कॉटा बन गया,
सीने पर हाथ रखा वह शोला बन गया।
दोस्त पर भरोसा किया तो गुलशन उजड़ गया,
किस पर भरोसा करूँ तेरी दुनिया से दिल वहीं उठ गया।''

समाज की परिस्थितियों, समस्याओं व हालातों को देखकर विवश राकेश समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूसरे तरीके से हल करना चाहता है। समाज के बीच रहकर जो जहर उसने पाला है वह उस जहर को उगलना चाहता है। वह डाकू बनकर गरीबों की मदद व उन पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करना चाहता है। धोखेबाजों और विश्वासघातों से आहत राकेश समाज में पनप रही बुराईयों को बुरे रास्ते पर चलकर खत्म करना चाहता है जिसका अन्त मृत्यु है। इस प्रकार से राकेश, क्रूरसिंह के साथ मिलकर डाकुओं के सरदार से अनायास ही जा मिलते हैं। डाकुओं का सरदार एक बूढ़ा आदमी है उसके पूछने पर राकेश ने अपना परिचय करवाया–

''सुनना ही चाहते हो तो सुनो हम अपने घर से यह सोचकर निकले हैं कि गरीबों की मदद करेंगे। उन पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करेंगे। धोखेबाजों और विश्वासघातों का नामोनिशान तक मिटा देंगे। हम डाकू बनकर ही ऐसा कर सकते हैं। क्योंकि यह दुनिया बड़ी ही बुरी है। अच्छा बनकर जो कुछ इन्सान करता है उसे ये दुनिया वाले बुरा बताते हैं।''

एक अच्छा खासा पढ़ने–लिखने वाला नौजवान, कद–काठी का नेक, ईमानदार, राह पर चलने वाला लड़का आज समाज की विसंगतियों से परेशान होकर, गलत रास्ते को इख्त्यार कर भलाई के काम करने को विवश है। जिस डाकुओं के सरदार से वे लोग मिलते हैं वह भी इसी तरह की विडम्बनाओं से गुजरा हुआ काफिला था जो डाकू बनकर नेक कार्य करते हैं। अमीरों को लूटकर, गरीबों की सहायता करते हैं। भूखों को रोटी देते हैं। जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। सरदार अपने आदमियों का परिचय करवाते हुए राकेश व उसके साथयों से कहता है–

''हम भी डाकू हैं। यह हमारा गिरोह है। साहूकारों को लूटना और भूखों को रोटी देना ही हमारा धंधा है। अब तक किसी ही गरीब नौजवान कन्याओं की शादी करवा चुके हैं। जो गरीबी से तंग आकर आत्महत्या करने की कोशिश करती थी। उन सुहागों को बचाया है जिसको साहुकार खरीद कर उनकी जिंदगी को वीरना कर देना चाहते थे। उन बच्चों की पढ़ाई का खर्च दे रहे हैं जो गरीबी के कारण न पढ़ने में असफल होते हैं। हम डाकू हैं फिर भी गरीबों की मदद करते हैं। अमीरों को लूटते हैं।

इस प्रकार राकेश, राकेश न रहकर डाकू पाल सिंह के नाम से प्रसिद्व हो गया। मध्य प्रदेश में डाकू पाल के नाम से लोग कॉप उठते थे। आज राकेश उर्फ डाकू पाल को पंजाब आए केवल तीन ही सप्ताह हुए थे। बड़े–बड़े डाके डाले। बहुत सा धन लूटा और गरीबों को दिया। गरीब डाकू पाल को देवता मानते थे। डाकू पाल उनकी आशा की किरण बन गया।

डाकूओं के समूह में भी भाईचारा व एकता, सामाजिकता व नैतिकता का परिचय मिलता है। जब राकेश उर्फ डाकू पाल को सरदार से मिले कई दिन हो गए तो सरदार ने राकेश के मिलने पर कहा– ''राकेश मुझे तो तुम्हारी बहुत ही चिन्ता हो रही थी।'' जवाब में राकेश ने कहा– ''आप मेरे बुजुर्ग हैं। आपको बताने से मैं कुछ भी हिचकिचाहट नहीं करूँगा। कई दिनों से मेरी तबीयत खराब हो जाने की वजह से मैं नहीं आ सका।''

अन्ततः डॉ0 शंकी ने कल्पना के आकाश से यथार्थ को धरातल पर लाकर यह सन्देश दिया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। समाज का जैसा रूप देखना है उसके लिए सामाजिक चेतना भी वैसी ही लानी होगी। सामाजिक चेतना का मूल्यांकन शंकी जी ने अति सजीव रूप में अपने उपन्यास 'बदनाम आरजू' में किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में समकालीन समस्याएं देशकाल व परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं। लेकिन उसका मूल अर्थ हर समय समाज में व्याप्त रहता है। उससे जुझने की सामर्थ्य व साधन परिवर्तित हो जाते हैं। सामाजिकता के साथ जन्य शोषण, अत्याचार, धोखा और विश्वासघात के उनके विरूद्व जीवन संघर्ष के सुख–दुख, घात–प्रतिघात, उत्थान–पतन के विविध रूपों का सजीव चित्रण है। लेखक का मानना है कि स्वस्थ मानसिकता से ही समाज का विकास हो सकता है। इस उपन्यास से समाज में उत्कृष्टता लाने का प्रयास किया गया है तथा सामाजिक सजगता का परिचय देते हैं।

संदर्भ

1. डॉ0 कैलाशचंद शर्मा 'शंकी' – बदनाम आरजू, पृ0 5।
2. वही, पृ0 5।
3. वही, पृ0 9।
4. वही, पृ0 23।
5. वही, पृ0 27।
6. वही, पृ0 66।
7. वही, पृ0 110।
8. वही, पृ0 111।
9. वही, पृ0 114।
10. वही, पृ0 114।